International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

समाज माध्यमों पर हिंदी भाषा का प्रभाव

डॉ. वंदना मोहिते

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

डी.पी. भोसले कॉलेज, कोरेगांव.

Corresponding Author – ***डॉ. वंदना मोहिते***

DOI - 10.5281/zenodo.18654591

शोध सार:

आज के समय एवं समाज में हिंदी भाषा एवं साहित्य का विशेष महत्व रहा है। हम सब जानते हैं की भाषा के कारण ही समाज की प्रगती हो पाई है। विचारों के आदान-प्रदान का वह सशक्त माध्यम है। कोई भी विचारक अपने ज्ञान को समाज में प्रसारित करना चाहता हो, तो उसे प्रचलित भाषा का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक होता है। वर्तमान समय में समाज माध्यमों का प्रचलन अधिक पैमाने पर रहा है। समाज माध्यमों के कारण समाज में विचारों का संवहन हो रहा है। विचारों के संचरण के लिए एक सशक्त भाषा का होना आवश्यक होता है। ऐसी भाषा जो समाज के अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हो, उसे सशक्त भाषा कहा जा सकता है। हिंदी भाषा का प्रचलन व्यापक है। आज के समय में वह ग्लोबल अर्थात वैश्विक भाषा मानी जाती है। विश्व के लगभग सभी देशों में वह बोली और समझी जाती है। इस कारण सामाजिक माध्यमों की वह सशक्त भाषा रही है। समाज माध्यमो के अंतर्गत अनेक उपकरण आते हैं। इन उपकरणों में इस भाषा का प्रयोग हो रहा है। सार यह है की समाज माध्यमों पर हिंदी का प्रभाव निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध निबंध में सामाजिक माध्यमों पर हिंदी के प्रभाव को अंकित किया गया है।

बीज शब्द: समाज, माध्यम, हिंदी, भाषा, प्रभाव।

शोध का उद्देश्य एवं महत्व:

हिंदी का सदियों से ही तेजी से विकास होता आया है। हिंदी समय के साथ बदलती रही है। आज हमें उसके अनेक रूप दिखाई देते हैं। संपर्क भाषा से उसकी शुरुवात हुई और आज वह विश्व भाषा के रूप में प्रचलित है। वैसे उसका संपर्क भाषा का रूप आज भी सामाजिक माध्यमों में जीवित है। अर्थात वह सामाजिक माध्यमों की मुख्य भाषा है। सर्वे के मुताबिक़ संपूर्ण विश्व में वह तीसरे नम्बर पर सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली महत्वपूर्ण भाषा है। इस श्रेणी में चीनी भाषा एक नंबर पर, अंग्रेजी भाषा दूसरे नंबर पर और हिंदी तीसरे नंबर पर बोली जाती है। अत: हिंदी भाषा का महत्व निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा सकता है। हिंदी इतने पर भी रुकी नहीं है अपितु समयानुसार वह तंत्रज्ञान की भाषा भी बन चुकी है। इसे तकनीकी भाषा कहा जा सकता है। हिंदी की लिपि वैज्ञानिक होने के कारण संभवता उसका यह विकास होता गया है। हिंदी सामाजिक माध्यमों की सशक्त भाषा बन चुकी है। हिंदी का सामाजिक माध्यमों पर जो प्रभाव रहा उसे अधोरेखित करना प्रस्तुत शोध निबंध का उद्देश्य है।

प्रस्तावना:

हिंदी भाषा का विकास संस्कृत से हुवा है। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, क्षेत्रीय अपभ्रंष, शौरसेनी अपभ्रंश और हिंदी। इस विकास की यात्रा को लगभग 1000 वर्ष लगे। हिंदी का पहला प्रचलित भारतीय रूप संपर्क भाषा का था, जिसे अंग्रेजी में (link Language) लिंक लैंग्वेज कहा जाता है। समय के साथ अपने आप को बदलते हुए हिंदी ने अनेक रूपों में अपने आपको परिवर्तित किया। इनमे- संपर्क भाषा, मात्रुभाषा, लोकप्रचलित राष्ट्रभाषा, राजभाषा, विश्व भाषा, तकनिकी भाषा आदि। हिंदी कभी रुकी नहीं। अपना विकास निरंतर करती रही है। हिंदी आज सामाजिक माध्यम (SOCIAL MEDIA) सोशल मिडिया की मुख्य भाषा के रूप में नजर आ रही है। सोशल मिडिया पर इसका गहरा प्रभाव रहा है। इसके कई कारण है। इनमे प्रमुख कारण है – देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता। दूसरा मुख्य कारण है – हिंदी समझने वालों की संख्या अधिक है अत: सोशल मिडिया ने भी अपने आपको हिंदी के अनुकूल बनाया है। सोशल मिडिया पर हिंदी के प्रभाव को देखने के लिए हमें सोशल मिडिया का सामान्य परिचय प्राप्त करते हुए, हिंदी उपयोगकर्ता (USERS) के आंकड़ों का विश्लेषण करना होगा। अत: इस आलेख में केन्द्रीय भाव के अंतर्गत इसका विश्लेषण किया गया है।

समाज माध्यमों का परिचय:

समाज माध्यमों को अंग्रेजी में (Social Media) कहा जाता है। ये समाज माध्यम समाज में प्रचलित तकनिकी एप होते हैं। मोबाइल का आविष्कार अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। मोबाइल का निर्माण पहले पहल दूर सन्देश के आदान-प्रदान के लिए विशेष कर किया जाता था। समय बदलता गया और अब मोबाइल के माध्यम से अनेक कार्य किये जाने लगे। उसमे कतिपय ऐसी सुविधाएं देखने को मिलती है, जो समाज में विचार सम्प्रेषण का माध्यम है। इसे ही हम सामाजिक माध्यम कह सकते हैं। इन्हें सन्दर्भ स्त्रोत भी कहा जाता है क्योंकि इन स्त्रोतों के माध्यम से ज्ञान का संग्रहण किया जाता है। समाज माध्यमों में वाट्सएप, फेसबुक, यू ट्यूब, इन्स्टाग्राम, ट्विटर, स्नेप चैट आदि आते हैं। इन माध्यमो में भलेही अंग्रेजी प्रयुक्त होती हो किंतु अनिवार्यता हिंदी का प्रयोग भी करना पड़ता हैं। सामाजिक माध्यमों के साथ हर व्यक्ति से घनिष्ट सबंध होता है। लगभग हर एक व्यक्ति इसका प्रयोग करता है। इसके प्रयोग के लिए एंड्राइड मोबाइल की जरुरत होती है। मोबाइल इन्टरनेट आन्तरजाल से जुडा होना आवश्यक होता है। अर्थात सामाजिक माध्यमो के प्रयोग के लिए मोबाइल, इन्टरनेट, (USERS) लोग और सामाजिक माध्यमों के एप होने आवश्यक होते हैं। सामाजिक माध्यमों का अर्थ समझ लेना आवश्यक है। इसकी परिभाषा इस प्रकार से दी जा सकती है- "जो एप युजर्स (उपयोगकर्ताओं) को कंटेंट बनाने, साझा करने और समाज में फैलाने या हिस्सा लेने और समाज में ऑनलाइन बातचीत करने की सुविधा देते हैं, वे सामाजिक माध्यम कहलाते हैं।"

सामाजिक माध्यमों का सामान्य परिचय निम्नलिखीत है –

1. **वाट्सएप:**

वाट्सएप मोबाइल से चलने वाला प्रचलित एप है। यह सामाजिक माध्यम का प्रमुख संसाधन है। 24 फरवरी, 2009 में जान कुम और ब्रायन एक्शन ने युनाईटेड स्टेटस के कैलिफोर्निया स्थित माउंट व्यू में की थी। वर्ष 2004 में उसे फेसबुक कम्पनी ने खरीद लिया। इसकी लोकप्रियता अत्यधिक है। इसे अंग्रेजी भाषा के साथ साथ अन्य अनेक भाषाओं में प्रयोग में लाया जाता है।

2. फेसबुक:

फेसबुक विश्वव्यापी नेट्वर्किंग की सुविधा है। समाज माध्यमों में इसका अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है। इसे मोबाइल, लैपटॉप और संगणक के द्वारा चलाया जाता है। फेसबुक के जनक हार्वर्ड विश्वविद्यालय के छात्र जुकेरबर्ग ने की। इसका पूर्व का नाम द फेसबुक था। फेसबुक का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में किया जाता है। फेस बुक के द्वारा विभिन्न संगठनों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों के बीच नेटवर्क स्थापित किया जाता है। फेस बुक पर फोटो, ऑडियो- वीडियो, आदि अपलोड किये जाते हैं। फेसबुक के माध्यम से पाठ्यसामग्री, विभिन्न समाचार, जानकारी, विचार, फोटो, गीत-संगीत, आदि जानकारी एक दूसरे के साथ आदान प्रदान की जा सकती है।

3. यू टयूब:

यू ट्यूब की स्थापना 2005 में हुई। यह गूगल की सहायक कंपनी है। इस प्लेट फॉर्म पर लोग विडिओ देख सकते हैं। अपने विडीयोज साझा कर सकते हैं। यह एक सामाजिक माध्यम है। लोग इसका उपयोग जानकारी प्राप्त करने और जानकारी को प्रसारित करने हेतु करते हैं। इसके उपयोग के लिए हिंदी भाषा की जानकारी का होना अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

4. इन्स्टाग्राम:

इन्स्टाग्राम की शुरुवात संगणक की शुरुवात से मानी जाती है। इस एप के आविष्कर्ता केविन सिस्ट्रोम और माइक क्रेगर रहे हैं। 6 अक्तूबर, 2010 को इन्स्टाग्राम की शुरुवात हुई है। यह एप विश्व की 33 भाषा में प्रयोग किया जाता है। यह एप मोबाइल (ANDROID DEVICE) के लिए उपयोग में लाया जाता है। इन्स्टाग्राम की प्रसिद्धी आम लोगों में अधिक पैमाने पर है। इन्स्टाग्राम इन्स्टा और कैमरा का मिला जुला रूप है।

5. ट्विटर:

ट्विटर सामाजिक माध्यमों का एक महत्वपूर्ण घटक है। जिस तरह पंछी चहकता है, उसी तरह कम शब्दों में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का यह एक सशक्त माध्यम है। ट्विटर के माध्यम से बड़े-बड़े नेतागण, विचारवंत, साहित्यकार, वैज्ञानिक तथा कोई विशेष ख्यातिप्राप्त व्यक्ति अपनी बात को साझा करता है। ट्विटर का जन्म 2006 में हुवा। उसका विकास दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। ट्विटर के लिए शब्द मर्यादा 140 रखी गयी है। इस प्रकार ट्विटर के बोल जल्द ही समाज में प्रसारित होते रहते हैं।

6. स्नेपचाट:

स्नेपचाट फोटो और विडीयोस साझा करने के लिए बनाया गया उत्तम एप है। इसका उपयोग अक्सर जवान बच्चे करते है। अपने ख़ास दोस्त को अपने विशिष्ट फोटोस इसके माध्यम से शेयर किये जाते हैं। इस एप की मुख्य विशेषता यह है की भेजे गए विडियोस या फोटोज अधिक समय तक नहीं टिक पाते हैं। सामाजिक माध्यमों में इस एप का भी विशेष महत्व रहा है।

इस प्रकार सामाजिक माध्यमों से सम्बंधित अनेकों एप्स हमें दिखाई देते हैं और विकसित होते रहते हैं। प्रश्न यह है की ये सारे एप्स निर्माता विदेशी होने के कारण एप्स की भाषा भी मुख्य तौर पर अंग्रेजी रही है किंतु शोध के अनुसार यह जानकारी सामने आती है की, हिंदी का इन सभी माध्यमों पर प्रभाव रहा है। इस सन्दर्भ में डॉ प्रियंका राणीने लिखा है- "हिंदी भाषियों की संख्या देश में लगभग 60

करोड़ से अधिक है और यह भाषा विश्व स्तर पर तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। ऐसे में यह अपेक्षित था कि हिंदी भी सोशल मीडिया की दुनिया में एक सशक्त और स्वाभाविक उपस्थिति दर्ज कराएगी।"[1] डाटा विश्लेषण के बाद यह हमारे सामने स्पष्ट होगा की हिंदी का प्रभाव कितना है।

केन्द्रीय भाव:

हिंदी की सुलभता एवं उसके महत्व को निरुपित करते हुए डॉ विकास पाटील ने लिखा है - "आज विश्व में ३००० से ज्यादा भाषाएँ बोली जाती है। भूमंडलीकरण के इस युग में 2030 तक इन भाषाओं में सिर्फ 10 भाषाएँ ही अपना अस्तित्व बरकरार रख पाएगी। बाकी सभी भाषाएँ लुप्त हो जायेंगी। विश्व में आज वही भाषा संपन्न एवं समृद्ध मानी जाती है, जो मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति के साथ उसे रोजगार प्राप्ति और रोजी रोटी कमाने के लिए सहायता करती है। विद्वानों का मानना है की, विश्व में जो दस भाषाएँ जीवित रहेगी उसमें हिंदी भाषा प्रमुख रहेगी।"[2] इस वक्तव्य को आधार बनाते हुए हम कह सकते हैं कि, जो भाषा सामाजिक माध्यमों पर अपना प्रभाव छोड़ेगी वही, भाषा जीवित रहेगी या उसका वैश्विक रूप बरकरार रहेगा। **समाज माध्यमों का समाज को एक दूसरे से बाँधने में महत्वपूर्ण योग रहता है।** पूरी दुनिया में किसी भी प्रकार की घटना घटित होती है तो वह कुछ ही समय में सबको पता चलती है। इसका कारण सामाजिक माध्यम होते हैं। सामाजिक माध्यम समाज के केंद्र बिंदु कह्लाते हैं। हम सब जानते हैं की समाज में भाषा का महत्व सबसे अधिक होता है क्योंकि इसी के माध्यम से किसी भाषा समाज के लोग आपस में एक दूसरे के संपर्क में आते रहते हैं विचारों का आदान प्रदान करते रहते हैं। जो भाषा सबसे अधिक प्रचलित होती है, सीधी और सरल होती है, वही भाषा सक्षम कहलाती है। इस दृष्टी से अगर देखा जाए तो अंग्रेजी की तरह हिंदी भी सक्षम भाषा की कोटि में आती है। हम देखे तो विश्व में तीसरे नंबर पर हिंदी बोली और समझी जाती है। इसलिए सामाजिक माध्यमों में भी इस भाषा का प्रयोग सबसे, अधिक मात्रा में हो रहा है। सामजिक माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा भलेही मानकता की दृष्टी से परिपूर्ण नहीं किंतु विचाराभिव्यक्ति की दृष्टी से परिपूर्ण कही जा सकती है। सामाजिक माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी का एक अलग रूप रहा है। इसे हिंदी और अंग्रेजी का मिला जुला रूप कहा जाता है। इस रूप के लिए हिंगलिश शब्द का प्रयोग किया जाता है। वैसे तो हिंदी के प्रचार प्रसार में सामाजिक माध्यमों की अहम भूमिका रही है। इसके पीछे भी कई कारण है। जैसे हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या का अधिक होना। दूसरे इस भाषा की वैज्ञानिकता का होना और तीसरे इसके लचीलेपन का होना महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार से हिंदी के प्रचार प्रसार में सामाजिक माध्यमों का विशेष योगदान रहा है, उसी प्रकार सामाजिक माध्यमों पर हिंदी का भी प्रभाव रहा है। हिंदी को छोड़ कर इन माध्यमों का उतना विकास नहीं हो सकता जितना आज तक हो सका है। इस संदर्भ में एक शोध पत्र में लिखा है - "सोशल मिडिया पर हिंदी के बढ़ते इस्तेमाल के चलते अब अंग्रेजी उपयोगकर्ता में भी हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है और इन आंकड़ों में तेजी से वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा इन्टरनेट उपयोगकर्ता देश है। जिसका श्रेय हिंदी भाषा को जाता है।"[3] इस वक्तव्य से यह स्पष्ट हो जाता है की हिंदी सामाजिक माध्यमों पर हिंदी का प्रभाव अधिक पैमाने पर रहा है। सामाजिक माध्यमों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव हिंदी की सरलता का द्योतक है। डॉ अंकिता ने लिखा है - "जनवरी, 2021 के सर्वे के अनुसार जँहा यू टूब यूजर्स दुनिया में 2.29 बिलियन रहे हैं, वही भारत में इसके 225 225 मिलियन यूजर्स रहे हैं। जो की देश की दुल संख्या का

16 प्रतिशत रहा है। जिसमें से अधिकांश वीडियो हिंदी भाषा में ही बनाए व देखे गए हैं। इसी तरह जुलाई, 2021 के अनुसार भारत में फेसबुक यूजर्स की संख्या 433900000 हो गयी जो की देश की कुल जन संख्या का 30.8 प्रतिशत रही है। इस प्रकार सोशल मिडिया के बढ़ते प्रयोग का कारण हिंदी भाषा ही है।"[4] ये आंकड़े बता रहे हैं की अन्य भाषा की तुलना में हिंदी का प्रयोग सामाजिक माध्यमों में अधिक हो रहा है। यह हिंदी के प्रभाव को अंकित करता है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है की सामाजिक माध्यमों की भाषा एक सशक्त भाषा के रूप में हिंदी प्रयुक्त होती है। हिंदी ने समयानुसार अपने आप में परिवर्तन लाया है। जिस भाषा का समाज में अत्यधिक प्रचलन होता है, वहीँ भाषा समाज माध्यमों पर अपना प्रभाव छोडती है। हिंदी ने वहीँ किया है। अत: सामाजिक मिडिया पर हिंदी का प्रभाव निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

सन्दर्भ:

1. डा. प्रियंका रानी - सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की स्थिति, (IJARPS), OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNALVol.01, eISSN 2583-6986, May 2022
2. **डॉ विकास पाटील – हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर, ए.बी.एस पब्लिकेशन, वाराणसी. वर्ष, 2019, भूमिका से .....**
3. अनंत प्रकाश शुक्ल www.multidiciplinaryjournal.org volume 8 पृ 177, 7/11/2023.
4. **डॉ अंकिता – सोशल मीडिया में हिंदी भाषा का बढ़ता प्रयोग, छतीसगढ़ मित्र 7 दिसंबर, 2025.**